अवध ज्योति

अवध भारती संस्थान की अवधी त्रैमासिकी

वर्ष – 24 जनवरी–मार्च 2018

मूल्य - 25

अवध-ज्योति

अवध भारती संस्थान की अवधी त्रैमासिकी

वर्ष - 24 जनवरी - मार्च 2018

संरक्षण
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित
जगदीश पीयूष

❑
सम्पादक
डॉ0 रामबहादुर मिश्र

❑
उप सम्पादक
प्रदीप तिवारी

❑
प्रबन्ध सम्पादक
ओम प्रकाश 'जयन्त'

❑
सह सम्पादक
विष्णु कुमार शर्मा
विश्वम्भरनाथ अवस्थी
सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर'

❑
अक्षर संयोजन
मो. सलमान अंसारी

❑
एक प्रति - रु. 25
वार्षिक - रू. 100

विषयानुक्रम

1. रामजोहारि - सम्पादकीय

2. चिट्ठी पत्री -

3. फागुन/बसंत विषयक कविताएं -

विष्णु कुमार शर्मा 'कुमार', शत्रुहनलाल विद्यार्थी, अशोक अज्ञानी, राज कुमार सोनी, अजय प्रधान, अनुज नागेन्द्र, सुनील बाजपेयी, रमई काका, डॉ0 राबहादुर मिश्र, पढ़ीस, आदित्य वर्मा, प्रदीप शुक्ल, पारस भ्रमर, गुरुप्रसाद सिंह मृगेश।

4. लेख - 1. प्रवासी भारतीयों के सरोकार और सरकार - डॉ0 राकेश पाण्डेय

5. लेख - 2. अवधी के फाग लोक जीवन के राग - डॉ0 रामबहादुर मिश्र

6. पारम्परिक अवधी फाग गीत - होरी, चौताल, डेढ़ताल, ढाईताल, धमार, उलारा

7. लेख - 3. बसंत विमर्श - डॉ0 सत्य प्रिय पाण्डेय

8. लेख - 4. बैसवारा की फाग - आचार्य निशिहर

9. नापतौल - (अवधी कृतियों की समीक्षा)

   1. यहै बतकही है हमार - कवि डॉ0 प्रदीप शुक्ल
   2. लोकगीत पाठ और विमर्श - लेखक डॉ0 सत्य प्रिय पाण्डेय

10. हाल चाल - (अवधी समाचार)

   1. लक्ष्मण प्रसाद स्मृति व्याख्यान माला एवं मित्र स्मृति अवधी सम्मान
   2. राष्ट्रीय संगोष्ठी - हिन्दी का संयुक्त परिवार विघटन के संकट
   3. ज्ञापन
   4. आद्या प्रसाद सिंह प्रदीप को लोकभूषण
   5. डॉ0 ज्ञानवती दीक्षित को मलिक मोहम्मद जायसी सम्मान।
   6. डॉ0 रामबाहदुर मिश्र इण्डोनेशिया में सम्मानित।

आजीव सदस्यता - व्यक्तिगत - 1500 आजीव सदस्यता - संस्थागत - 3000

सम्पादकीय पत्र व्यवहार - कार्यालय अवध भारती संस्थान -
लोक कला मंच लोक सदन नरौली, बीजापुर (हैदरगढ़) बाराबंकी - 225124
लखनऊ कार्यालय : आर.एन. नागर कालोनी सुल्तानपुर रोड अर्जुनगंज, लखनऊ - 226002
मो. 9450063632, e-mail : awadjyoti@gmail.com, salmanansari7@gmail.com

अवध ज्योति से सम्बन्धित सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हैदरगढ़ होगा।

रामजोहारि

फागुन मा दादा देवर लागैं

''गड़िगे बसंत के ढाह बिना होली तापे न जाबै'' ई गौनई माघ महीना के बसंत पंचमी की संझा बेरिया होली कै ढाह गड़े के बाद गांवन मा महरानी के थान पर गउतै खन फागुन कै आहट जनाय परत है। फागुन मा धरती कै सिंगार देखि के जिउ वइसन हुड़कै लागत है, जइसन अलबेली नारि कै सिंगार देखि के रसियन कै करेज हुड़कत है। अइसन लागत है मानौ धरती मैया सतरंगी सारी पहिरे होयँ। सरसों कै पियर सारी औ वहि पर हरियर, लाल, गुलाबी, असमानी, नारंगी रंग के बूटा छापि धरती मइया अंठिलाय रही होय। अरसी कै फूल अस लागत है मानौ आंखिन म आंजन दीन गवा होय। चना कै गुलाबी फूल देखि देखि गोहुंवन की बाली नाचै लागत हैं। आम बौराय जात हैं, महुवा कुचाय लागत हैं, करवंद कै सुगंध मन क बौरावत है। बाग बगैचा मदमाती खुशबू से गमकै लागत है। बिरवन की सबै डारि रस से परिपून होइ जात है। अरहरी के खेत कै सजाव-बनाव मन मा हुलास पैदा करत है। मधुमास बसंत कै अइसन परभाव होत है कि जड़ चेतन सब बौराय जात हैं। सगरा गांव फागुन के स्वागत सतकार मा जुटि जात है। गाँवन की गली, महरानी के थान औ बैठका मां संझा बेरिया होरी, फगुवा, चौताल, उलारा मतवाला कै धूम मचि जात है। लरिका जवान तौ पाछे रहि जात हैं, बुढ़िया-बुढ़वा सठियाय के फगुवा गावै लागत हैं। फागुन महीना मा रड़ुवन औ ठेलुहन कै लोय लाग जात है चहै जिहका फगुवा गाय के अंठिलाय लेंय। यहि समइया म भउजी औ देवर कै हंसी-ठिठोली, मसखेर बाजी औ चुहुलबाजी देखत बनत है। रसिया देवर भउजी क कबौ-कबौ कनिया म उठाय के कबीर गावै लागत हैं। फागुन आवा नहीं कि पूरा गांव बौराय उठत है। ई सब कामदेव कै महिमा होय।

कामदेव क बसंत कै सखा माना गवा है, दूनौ कै चोली दामन कै नाता है। यहीलिए बसंत औ फागुन के अउतै तन-मन मा काम कै वासना जोराय जात है। मनई, पसु-पच्छी, वन-बाग सबै कामातुर होइ जात हैं। अमराई मंजरी के भार से लदि जात हैं। सगरी धरती रस से सराबोर होइ जात है। मदमाती फगुनी बयार के पंखना पर सवार होइके कोइलरि कुहू-कुहू सुनाय सबके कान मा बसंत औ फागुन कै आगम बतावत है। जवानी औ मस्ती, हास-उल्लास, प्रेम कै आतुर पुकार बसंत शृंगार रस कै गगरी ढरकावै लागत है औ मन गुनगुनाय लागत है बसंती गीत, फगुवा, होरी। फागुन के महीना म जउनी साइत फगुनी बयार कै झोंका सरीर म लागत है - तन - मन बौराय उठत है। कहा जात है - दिन फगुवाय गये' ई फगुनी बयार हमरी काम भावना क झकझोरि देत है। औ तन-मन सब बंधन से छुटकारा पावा चाहत है - कामातुराणां न भयं न लज्जा। बिरहिन तड़पै लागत हैं पिया से मिलै खातिर। तुलसी बाबा कामदेव के परभाव कै बड़ा सुन्दर वर्णन किहिन हैं -

जे सजीव जग अचर-चर, नारि पुरुष अस नाम।
ते निज निज मरजाद तजि, भए सकल बस काम।।
सब के हृदय मदन अभिलाषा। लता निहारि नवहिं तरु साखा।।

नदी उमंगि अंबुधि कहँ धाई। संगम करहिं तलाव तलाई।।
जहँ असि दसा जड़न्ह कै बरनी। को कहि सकइ सचेतन करनी।।
पसु पच्छी नभ जल थल चारी। भए काम सब समय बिचारी।।
मदन अंध व्याकुल सब लोगा। निसिदिन नहि अवलेकहिं कोका।।
देव दनुज नर किन्नर ब्याला। प्रेत पिसाच भूत बैताला।।
इन्ह कै दसा न कहेउँ बखानी। सदा काम के चेरे जानी।।
सिद्ध विरक्त महामुनि जोगी। तेपि काम बस भए वियोगी।।
भए काम बस जोगीस तापस पावंरन्हि की को कहै,
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे,
अबला बिलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अबलामयं।

कामदेव कै परभाव बतावत भए बाबा तुलसी लिखत हैं - कामदेव कै अइसन असर भवा कि दुनिया म जतने स्त्री-पुरुष नाम धारी चर-अचर प्राणी रहें उइ सब आपन-आपन मरजादा छोड़ि काम के वश मा होइ गए। सब के मन मा काम वासना जागि गै। लता क देखि पेड़न की डारी झुकै लागीं, नदी समुद्र की ओरिया दौरि परी, ताल - तलैया आपस मा संगम करै लागीं। सब लोग कामांध होइके ब्याकुल होय लाग। चकई - चकवा दिन रात भूलि गए। देवता, राक्षस, मनई, किन्नर, नाग, भूत, बैताल, ई सब तौ सदा से कामी रहे हैं। इनकै बात करब बेकार है। कामदेव कै यस परभाव भवा कि सिद्ध, विरक्त, महामुनि, जोगी सबै काम के बस होइके कामिनी के बिरही बनि गएं। जब जोगी तपसी काम के वशीभूत होइ गएं तौ मनई कै कौन बिसात। जे पूरे ब्रह्माण्ड का ब्रह्ममय देखत रहें वै अब वही ब्रह्माण्ड का कामिनीमय देखै लागै। कामिनी सारे ब्रह्माण्ड का पुरुषमय औ पुरुष स्त्रीमय देखै लागैं।

कामदेव कै ई परभाव फागुन म जोराय जात हैं। लोकजीवन मा कहकुति है - फागुन म दादा देवर लागैं। सचमुच फागुन मा मरजादा कै बंधन टूटि जात हैं। साल भर जउन काम औ रति कै दमित भावना होत है वहिका लोक तूरि के बहाय देत हैं। हमैं आपन बचपन याद आवत है। जब हम सब होली जरावै बदे ईधन औ लकड़ी यकट्ठा करै जात रहेन, तब वहि टोली मा लरिका, जवान बुढ़वा सब रहत रहें। संझा बेरिया सब खाय पिये के बाद अंजोरिया रात मा सरसौ कै पिंझी, सरपत, घास-फूस, लकड़ी ढोय, ढोय चंदवा ताल जहाँ ढाख गाड़ा रहा हुवां डारत रहिन। डफाली चच्चा सबकै मनोरंजन करैं कबीर सुनाइ के। चच्चा एक कनाई उठावैं - हम सब कबीर जोर-जोर गाई। वहि समइया अतनी समझ नहीं रही। हमैं तौ बस गौनई लागै। ई तौ समझदारी भए पर कबीर कै मरम समझ म आवा। दुइ यक कबीर कै बानगी-चौखटी प घूंघुर बाजत है, बिन किहे छिनारा लागत है। परसाद कै दुलहिन नेउता दिहिन कि आयेउ आधी रात, अपना बुजरौ सोय गई हम .... निकारे ठाढ़। चिढ़िहौ हौ त मारि देब चुरिया मा नौगजा हिलाय देब .... मा। हैं तो तमाम, याद मुला कुछ शुचितावादी हमका लठियावै लगिहैं। सच्ची बात तौ ई है कि फाग, फगुवा, बसंत, फागुन, मनई की दमित कामभावना औ रति भावना क फागुन मा निकारि बहावत है, साल भर खातिर। लोकशास्त्र कै ई मरम समझै कै जरूरति है। सब पंचन क राम जोहारि। नए भारतीय संवत कै सब का बधाई।

रामबहादुर मिसिर